लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम....दैनिक जागरण....

दिनांक...13. 3. 2020... पृष्ठ सं....17.... कॉलम...5-7...

वैज्ञानिकों ने किए व्यावसायिक अनुभव साझा

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सेंटर में आयोजित 12 दिवसीय इंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण में गुरुवार को एचएयू और विदेशी मेहमानों के बीच व्यावसायिक अनुभव साझा किये गए। दरअसल कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास : कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित ईंडों-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण चल रहा है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने वर्जीनिया विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. थॉमस थॉम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। इस अवसर पर डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचैंज कार्यक्रम, डूअल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में डा. थॉमस ने बताया कि वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक से कार्य कर रहा है और हकृवि के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है। डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नववैचारिक तकनीकी को भी साझा करने की बात कही। सीएएआइ के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीक विवि से डा. लांस मथैसन, डा. माइकल श्वाइश, जैसिका एग्नूव, एचएयू के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डा. एके छाबड़ा व वनस्पति एवं पादप कार्यिकी विभागाध्यक्ष डा. रेनू मुंजाल आदि उपस्थित रहे।

इंडो-यूएस अफगानिस्तान वैज्ञानिक मेहमानों संग अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत •विज्ञप्ति

फसल अवशेष प्रबंधन समय की जरूरत : डॉ. हुड्डा

जासं, हिसार : कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर व प्रगति सीनियर सेकेंडरी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को फसल अवशेष प्रबंधन पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के विभिन्न कक्षा वर्ग के बच्चों ने भाग लेते हुए निबंध लेखन, पेंटिंग व पोस्टर मेकिंग के माध्यम से अपने मनोभाव प्रस्तुत किए। इसके साथ ही गांव में जागरूकता रैली निकालते हुए ग्रामीणों को फसल अवशेष न जलाने व उनका उचित प्रबंधन करने के लिए प्रेरित किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र से डा. विकास, डॉ. पूजा जांगड़ा व डॉ. सत्यवीर कुंडू ने कहा कि वर्तमान में किसान अज्ञानतावश फसलों के अवशेषों को जला देते हैं। इससे जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट होती है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम पंजाब केसरी
दिनांक 13.3.2020 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 3-5

हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों व विदेशी वैज्ञानिक के बीच पारस्परिक व व्यावसायिक अनुभव हुआ सांझा

हिसार, 12 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सैंटर में आयोजित 12 दिवसीय कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास : कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित इंडो-यू.एस. अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में आज हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों के बीच पारस्परिक अनुभव को सांझा किया गया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक, डा. एस.के. सहरावत ने वर्जिनिया टैक्नोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. थॉमस थाम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। डा. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूएल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। इस प्ररिप्रेक्ष्य में डॉ. थॉमस ने बताया कि वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक से कार्य कर रहा है और हकृवि के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है।

अनुसंधान निदेशक, डा. एस.के. सहरावत इंडो-यू.एस. अफगानिस्तान वैज्ञानिक मेहमानों के साथ।

सस्य विभाग विभागाध्यक्ष, डा. एस.एस. पूनिया ने हरियाणा राज्य में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। उन्होंने गेहूं व चावल की फसल की उत्पादन क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है इससे संबंधित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता की विस्तृत जानकारी दी और उसें भविष्य में कैसे बढ़ाया जा सकता है इस पर निरंतर काम करने की और सतत प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर सी.ए.ए.आई. के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय से डा. लांस मथैसन, डा. माइकल श्वाइश, जैसिका एग्नूव, हकृवि के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डा. ए.के. छाबड़ा एवं वनस्पति एवं पादप कार्यिकी विभागाध्यक्ष डा. रेनू मुंजाल एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस.के. ठकराल व अन्य वैज्ञानिकगण उपस्थित रहें।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 13.3.2020 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 1-5

एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों व विदेशी वैज्ञानिकों ने व्यावसायिक अनुभव को लेकर किया विचार-विमर्श

कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास से संबंधित ईंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में अनुभव किए साझा

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के एबिक सेंटर में 12 दिवसीय कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास से संबंधित ईंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में गुरुवार को एचएयू और विदेशी वैज्ञानिकों ने कृषि के क्षेत्र में अपने-अपने अनुभव सांझा किए। कृषि के क्षेत्र में चल रही नई-नई तकनीकों के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने वर्जिनिया टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. थॉमस थॉम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की।

एचएयू के अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत ईंडों-यूएस अफगानिस्तान वैज्ञानिकों के साथ।

डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूएल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नव वैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में डॉ. थॉमस ने बताया कि वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक से कार्य कर रहा है और एचएयू के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है। डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नव वैचारिक तकनीकी को भी सांझा करने की बात कहीं।

सस्य विभाग विभागाध्यक्ष, डॉ. एसएस पूनिया ने हरियाणा राज्य में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। उन्होंने गेहूं व चावल की फसल की उत्पादन क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है इससे संबंधित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता की जानकारी दी और उसें भविष्य में कैसे बढ़ाया जा सकता है इस पर निरंतर काम करने की और सतत प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर सीएएआई के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय से डॉ. लांस मथैसन, डॉ. माइकल श्वाइश, जैसिका एग्नूव, एचएयू के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डॉ. एके छाबड़ा एवं वनस्पति, पादप कार्यिकी विभागाध्यक्ष डॉ. रेनू मुंजाल एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके ठकराल मौजूद रहे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम हरिभूमि
दिनांक 13.3.2020 पृष्ठ सं. 14 कॉलम 4-8

कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों ने पारस्परिक व व्यावसायिक अनुभव सांझा किए

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सेंटर में 12 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सेंटर में आयोजित 12 दिवसीय कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास : कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित इंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में बृहस्पतिवार को हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों के बीच पारस्परिक अनुभव को सांझा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत ने वर्जिनिया टैक्रोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. थॉमस थॉम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। इस अवसर पर डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूएल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में डॉ. थॉमस ने बताया कि वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक से कार्य कर रहा है और हकृवि के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है। डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नववैचारिक तकनीकी को भी सांझा करने की बात कहीं। सस्य विभाग विभागाध्यक्ष, डॉ. एसएस पूनिया ने हरियाणा राज्य में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। उन्होनें गेहूं व चावल की फसल की उत्पादन क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है इससे संबंधित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता की जानकारी दी और उसें भविष्य में कैसे बढाया जा सकता है इस पर निरंतर काम करने की और सतत प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर सीएएआई के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय से डॉ. लांस मथैसन, डॉ. माइकल श्वाइश, जैसिका एग्नूव, हकृवि के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. रेनू मुंजाल एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके ठकराल आदि मौजूद थे।

हिसार। अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत ईंडों-यूएस अफगानिस्तान वैज्ञानिक मेहमानों के साथ।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: दैनिक ट्रिब्यून

दिनांक: 13.3.2020 पृष्ठ सं: 6 कॉलम: 2-5

ईंडो-यूएस-अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

हकृवि और विदेशी वैज्ञानिकों ने साझा किए अनुभव

विद्यार्थी एक्सचेंज, ड्यूएल डिग्री जैसे प्रोग्राम पर दिया जोर

हिसार, 12 मार्च (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सेंटर में आयोजित 12 दिवसीय कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास, कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित ईंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में आज हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों व विदेशी वैज्ञानिकों ने एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा किए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने वर्जिनिया टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. थॉमस थॉम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की।

हिसार स्थित हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत बृहस्पतिवार को ईंडो-यूएस अफगानिस्तान वैज्ञानिक मेहमानों के साथ। -निस

इस अवसर पर डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूएल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया।

डॉ. थॉमस ने बताया कि वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, शस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक कार्य कर रहा है और हकृवि के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है। डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नववैचारिक तकनीकी को भी साझा करने की बात कही।

हरियाणा में कृषि संरक्षण की हुई बात

शस्य विभाग विभागाध्यक्ष, डॉ. एसएस पूनिया ने हरियाणा में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। उन्होंने गेहूं व चावल की फसल की उत्पादन क्षमता बढ़ाने से संबंधित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता की जानकारी दी। इस अवसर पर सीएएआई के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय से डॉ. लांस मथैसन, डॉ. माइकल श्वाइश, जैसिका एग्नूव, हकृवि के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डॉ. एके छाबड़ा एवं वनस्पति एवं पादप कार्यिकी विभागाध्यक्ष डॉ. रेनू मुंजाल एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके ठकराल व अन्य वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम ....अमर उजाला....
दिनांक ....13.3.2020.... पृष्ठ सं. ....5.... कॉलम ....6....

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विदेशी मेहमानों के साथ अनुभव किए साझा

हिसार। एचएयू के एबिक सेंटर में आयोजित कृषि अनुसंधान और जलवायु - स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित इंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में वीरवार को विवि के कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों के बीच पारस्परिक अनुभव को साझा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस के सहरावत ने वर्जिनिया टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. थॉमस थॉम्पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। इस अवसर पर डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूल डिग्री प्रोग्राम, शॉर्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। वहीं डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नव वैचारिक तकनीकी को भी सांझा करने की बात कहीं। इस अवसर पर सस्य विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. एसएस पूनिया ने हरियाणा राज्य में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। इस मौके सीएआई के मुख्य प्रभारी नूर सिद्दिक, वर्जिनिया तकनीकी विश्वविद्यालय से डॉ. लांस मथैसन, डॉ. माइकल श्वाइश आदि मौजूद रहे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम सिटी पल्स
दिनांक 12.3.2020 पृष्ठ सं 2 कॉलम 1-4

हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों के बीच पारस्परिक व व्यावसायिक अनुभव किए साझा

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के एबिक सेंटर में आयोजित 12 दिवसीय कृषि नवाचार प्रणाली के लिए क्षमता विकास : कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट कृषि दृष्टिकोण संबंधित ईंडो-यूएस अफगानिस्तान प्रशिक्षण कार्यशाला में आज हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों एवं विदेशी वैज्ञानिक मेहमानों के बीच पारस्परिक अनुभव को सांझा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत ने वर्जीनिया टैक्नोलॉजी विश्वविद्यालय के कृषि एवं जैव विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. थॉमस थॉं पसन के साथ विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। इस अवसर पर डॉ. सहरावत ने वैज्ञानिक-विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम, ड्यूएल डिग्री प्रोग्राम, शार्ट ट्रेनिंग विजिट एवं नववैचारिक अनुसंधान कार्यक्रम के प्रोत्साहन पर जोर दिया। इस प्रपिरेक्ष्य में डॉ. थॉमस ने बताया कि वर्जीनिया तकनीकी विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों जैसे, कृषि, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान, मृदा विज्ञान के क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक से कार्य कर रहा है और हकृवि के साथ अपने अनुभव सांझा करने के लिए उत्सुक है। डॉ. थॉमस ने कार्यशाला के माध्यम से किसानों की उपज एवं आय बढ़ाने के लिए उनके पास उपलब्ध नववैचारिक तकनीकी को भी सांझा करने की बात कही।

सस्य विभाग विभागाध्यक्ष, डॉ. एसएस पूनिया ने हरियाणा राज्य में कृषि के संरक्षण के बारे में बताया। उन्होंने गेहूं व चावल की फसल की उत्पादन क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है इससे संबंधित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता की जानकारी दी। इस अवसर पर हकृवि के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभागाध्यक्ष, डॉ. एके छाबड़ा एवं वनस्पति एवं पादप कार्यिकी विभागाध्यक्ष डॉ. रेनू मुंजाल एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके ठकराल व अन्य वैज्ञानिकगण उपस्थित रहें।

हिसार। अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत ईंडो-यूएस अफगानिस्तान वैज्ञानिक मेहमानों के साथ।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: दैनिक भास्कर
दिनांक: 13.3.2020 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-5

नई खोज • एचएयू में तीन साइंटिस्ट को सौंपा रिसर्च से लेकर पैदावार का जिम्मा, किसानों को होगा फायदा

अलसी की 2500 किस्में पैदा करेगा एचएयू, किसानों को किया जाएगा ट्रेंड, 90 लाख रुपये का बजट जारी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

अब एचएयू अलसी की 2500 से अधिक किस्में को पैदा करेगा। साथ ही अलसी पर रिसर्च भी की जाएगी। इसके लिए भारत सरकार ने कुल 22.55 करोड़ के प्रोजेक्ट को स्वीकृति दी है। इसमें से अकेले 90 लाख का बजट एचएयू के लिए स्वीकृत किया गया है।

जल्द ही अलसी पर एचएयू में काम शुरू किया जाएगा। यही नहीं यूनिवर्सिटी के साइंटिस्ट अन्य किसानों को भी अलसी के प्रति ट्रेंड कर सकेंगे। दरअसल, प्रदेश में अलसी की खेती व्यापक स्तर पर नहीं की जाती है। खेती को बढ़ावा देने और रिसर्च के उद्देश्य से प्रोजेक्ट के लिए स्वीकृति प्रदान की गई है।

एचएयू के कुलपति डॉ. केपी सिंह ने बताया कि प्रोजेक्ट का टाइटल लिवरेजिंग जेनेटिक रिसोरसिस फॉर एक्सेलिरेटिड जेनेटिक इंपरूवमेंट ऑफ लिनसिड (अलसी) यूसिंग कांपरेहैन्सिव जेनोमिक्स एंड फिनोटाइपिंग एपरोचिस है, जोकि भारत के माइनर ओयलसीड ओरोजिन प्रोग्राम के तहत दिया गया है। इस प्रोजेक्ट में एचएयू को नब्बे लाख (90.357) की राशि प्रदान की गई है। इस प्रोजेक्ट की अवधि पांच साल है और इसमें एचएयू सेलेनिटी कोंपोनेंट पर अलसी के फिनोटाइपिंग और डिवेलपमेंट आफ मैपिंग पोपूलेशन पर काम करेगा। इस प्रोजेक्ट की पी.आई. डॉ. अनीता कुमारी, कोपीआई डॉ. रेनु मुंजाल तथा डॉ. राम अवतार हैं। इस अनुसंधान के तहत 2500 अलसी की विभिन्न किस्मों पर काम किया जाएगा।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने तीनों वैज्ञानिकों को बधाई दी और बताया कि एचएयू में पहली बार अलसी की इतनी अधिक किस्मों पर कार्य होगा। रिसर्च और फसल की नई किस्मों को पैदा करने के बाद आसपास के किसानों को भी ट्रेंड किया जाएगा।

जानिए क्या है असली...

अलसी या तीसी समशीतोष्ण प्रदेशों का पौधा है। रेशेदार फसलों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। अलसी के बीज से निकलने वाला तेल प्रायः खाने के रूप में उपयोग में नहीं लिया जाता है बल्कि दवाइयां बनाई जाती हैं। इसके रेशे से मोटे कपड़े, डोरी, रस्सी और टाट बनाए जाते हैं। इसके बीज से तेल निकाला जाता है और तेल का प्रयोग वार्निश, रंग, साबुन, रोगन, पेंट तैयार करने में किया जाता है। चीन इसका सबसे बड़ा उत्पादक देश है। रेशे के लिए सन को उपजाने वाले देशों में रूस, पोलैण्ड, नीदरलैण्ड, फ्रांस, चीन तथा बेल्जियम प्रमुख हैं और बीज निकालने वाले देशों में भारत, संयुक्त राज्य अमरीका तथा अर्जेण्टाइना के नाम उल्लेखनीय हैं।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: अमर उजाला
दिनांक: 13.3.2010 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 3-5

शोध : लवणीय जमीन पर अलसी की खेती की संभावना तलाशेगा एचएयू

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिक लवणीय जमीन पर अलसी की खेती की संभावना तलाशेंगे। इस प्रोजेक्ट के लिए डीबीटी भारत सरकार की तरफ से करीब 90 लाख रुपये की राशि दी गई है। इस प्रोजेक्ट की अवधि पांच साल की है। बता दें कि प्रदेश में लवणीय जमीन की काफी समस्या है।

अलसी की 2500 किस्मों पर काम करेंगे वैज्ञानिक

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार ऐसी जमीन पर खेती करना संभव नहीं है। मगर अब एचएयू के वैज्ञानिक लवणीय जमीन पर अलसी की खेती को लेकर रिसर्च करेंगे। एचएयू के वैज्ञानिकों के अनुसार इस रिसर्च के दौरान वह अलसी की करीब 2500 किस्मों पर काम करेंगे। इस दौरान यह पता लगाया जाएगा कि इनमें से कौन-कौन सी किस्म ऐसी जमीन पर पर जिंदा रह सकती है। जब उन किस्मों का पता लग जाएगा तो इसके बाद जिनकी पैदावार अच्छी होगी, उनके जीन की पहचान की जाएगी, ताकि उनकी मदद से अच्छी पैदावार देने वाली किस्में विकसित की जा सके।

पहली बार अलसी की इतनी किस्मों पर काम करेगा विवि

इस प्रोजेक्ट की पीआई डॉ. अनीता कुमारी ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का नाम लिवरेजिंग जेनेटिक रिसोरसिस फॉर एक्सेलिरेटिड जेनेटिक इंपरुवमेंट ऑफ लिनसिड (अलसी) यूसिंग कांपरेहेनसिव जेनोमिक्स एंड फिनोटाइपिंग एपरोचिस है। यह भारत सरकार के माइनर ओयलसीड ओरोजिन प्रोग्राम के तहत दिया गया है। इस प्रोजेक्ट में एचएयू सेलेनिटी कॉपोनेंट पर अलसी के फिनोटाइपिंग और डेवेलपमेंट आफ मैपिंग पोपूलेशन पर काम करेगा। इस प्रोजेक्ट में उनके अलावा, को-पीआई डॉ. रेनु मुंजाल व डॉ. राम अवतार है। उन्होंने बताया कि पहली बार विवि में अलसी की इतनी अधिक किस्मों पर कार्य होगा।

अलसी के इस्तेमाल

अलसी के बीजों के तेल का इस्तेमाल खाने में किया जाता है। दवाओं में भी इसका प्रयोग होता है। इसके अलावा अलसी से फाइबर मिलता है, जिसका इस्तेमाल कपड़ा (लीनन) बनाने में भी किया जाता है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 13.3.2020 पृष्ठ सं. 15 कॉलम 5-6

साल्ट स्ट्रेस झेलने वाली अलसी की किस्म पर काम करेगा एचएयू

जागरण संवाददाता, हिसार: उत्तरी भारत में उगने वाली अलसी को हरियाणा की नमकीन भूमि के लिए भी तैयार किया जा रहा है। इसके लिए भारत सरकार ने डीबीटी स्कीम के तहत चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) को 90 लाख रुपये की ग्रांट दी है। इस धनराशि से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अलसी की 2500 किस्मों पर परीक्षण करेंगे। वह अपने प्रयोगों में जानेंगे कि कौन सी अलसी की किस्म ऐसी है, जिसमें सॉल्ट स्ट्रेस झेलने की क्षमता है। हरियाणा की जमीन में नमकीय तत्व लगातार बढ़ते जा रहे हैं, जिसको लेकर ऐसी परिस्थितियों में अच्छी पैदावार पाने के लिए अलसी पर काम किया जा रहा है। इसके साथ ही तेल से जुड़ी दूसरी फसलों पर जाने के लिए भी यह प्रोजेक्ट एचएयू को मिला है।

डीबीटी स्कीम में कुल 22.55 करोड़ रुपये जारी

भारत सरकार की डीबीटी स्कीम 22.55 करोड़ रुपये के एक प्रोजेक्ट को स्वीकृति दी गई है। इस प्रोजेक्ट का विषय लिवरेजिंग जेनेटिक रिसोर्सिस फॉर एक्सेलिरेटिड जेनेटिक इंपरूवमेंट ऑफ लिनसिड (अलसी) यूसिंग कांपरेहैनसिव जेनोमिक्स एंड फिनोटाइपिंग एपरोचिस है। जो कि भारत के माइनर ओयलसीड ओरोजिन प्रोग्राम के तहत दिया गया है। इस प्रोजेक्ट में एचएयू को 90.35 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई है। इस प्रोजेक्ट की प्रोजेक्ट इन्वेस्टिगेटर डॉ. अनीता कुमारी, कोपीआइ डॉ. रेनु मुंजाल तथा डॉ. राम अवतार हैं। हकृवि में पहली बार अलसी की इतनी अधिक किस्मों पर कार्य होगा।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम पंजाब केसरी, हरिभूमि
दिनांक 13.3.2020 पृष्ठ सं 3, 11 कॉलम 4-6, 7

हकृवि को प्रोजैक्ट के मिले 90 लाख रुपए

हिसार, 12 मार्च (ब्यूरो): डी.बी.टी. भारत सरकार द्वारा 22 करोड़ 55 लाख 81 हजार 420 रुपये (22,55,81,420) के एक प्रोजैक्ट को स्वीकृति प्रदान की है। इस प्रोजैक्ट का टाइटल लिवरेजिंग जेनेटिक रिसोरसिस फॉर एक्सेलिरेटिड जेनेटिक इंपरुवमेंट ऑफ लिनसिड (अलसी) यूसिंग कांपरेहैनसिव जेनोमिक्स एंड फिनोटाइपिंग एपरोचिस है जो कि भारत के माइनर ओयलसीड ओरोजिन प्रोग्राम के तहत दिया गया है। इस प्रोजैक्ट में हकृवि को नब्बे लाख (90.357) की राशि प्रदान की गई है। इस प्रोजैक्ट की अवधि पांच साल है और इसमें हकृवि सेलेनिटी कोंपोनेंट पर अलसी के फिनोटाइपिंग और डिवेल्पमैंट आफ मैपिंग पोप्यूलेशन पर काम करेगा। इस प्रोजैक्ट की पी. आई. डा. अनीता कुमारी, कोपीआई डा. रेनु मुंजाल तथा डा. राम अवतार है।

इस अनुसंधान के तहत 2500 अलसी की विभिन्न किस्मों पर काम किया जाएगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने तीनों वैज्ञानिकों कों बधाई दी और बताया कि हकृवि में पहली बार अलसी की इतनी अधिक किस्मों पर कार्य होगा।

हकृवि को केंद्र सरकार ने दी 90 लाख का राशि

हिसार। डीबीटी भारत सरकार द्वारा 22 करोड़ 55 लाख 81 हजार 420 रुपये के प्रोजेक्ट की मंजूरी मिली है। इस प्रोजेक्ट का टाइटल लिवरेजिंग जेनेटिक रिसोरसिस फॉर एक्सेलिरेटिड जेनेटिक इंपरुवमेंट ऑफ लिनसिड -(अलसी) यूसिंग कांपरेहैनसिव जेनोमिक्स एंड फिनोटाइपिंग एपरोचिस है जोकि भारत के माइनर ओयलसीड ओरोजिन प्रोग्राम के तहत दिया गया है।

इस प्रोजेक्ट में हकृवि को 90 लाख की राशि प्रदान की गई है। इस प्रोजेक्ट की अवधि पांच साल है और इसमें हकृवि सेलेनिटी कोंपोनेंट पर अलसी के फिनोटाइपिंग और डेवेलपमैंट आफ मैपिंग पोपूलेशन पर काम करेगा। इस प्रोजेक्ट की पीआई डॉ. अनीता कुमारी, कोपीआई डॉ. रेनु मुंजाल तथा डॉ. राम अवतार है। इस अनुसंधान के तहत 2500 अलसी की विभिन्न किस्मों पर काम किया जाएगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने तीनों वैज्ञानिकों कों बधाई दी और बताया कि हकृवि में पहली बार अलसी की इतनी अधिक किस्मों पर कार्य होगा।